ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 3, May - June 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.028

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

भारतमहाकाव्य पर जैन दर्शन का प्रभाव: एक समालोचनात्मक अवलोकन

मनोज कुमार[1] **डॉ. चंद्रलेखा शर्मा**[2]

शोधछात्र - संस्कृत विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान (भारत) [1]
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान (भारत) [2]

सारांश:

यह शोधपत्र "भारतचरित महाकाव्य" में अंतर्निहित दार्शनिक अवधारणाओं — विशेषतः मोक्ष, आत्मा, ज्ञान प्राप्ति, सृष्टि-निर्माण, पुनर्जन्म और केवल्य — का विश्लेषण करता है। महाकाव्य का मूल आधार जैन दर्शन है, जिसमें आत्मा की स्वतंत्रता, अहिंसा, और कर्म-बंधन से मुक्ति को मानव जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। भरत, बाहुबली और ऋषभदेव जैसे पात्रों के माध्यम से यह काव्य दर्शाता है कि कैसे आध्यात्मिक साधना, आत्मज्ञान और त्याग के मार्ग से केवलज्ञान और मोक्ष की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

लेख में यह भी विश्लेषित किया गया है कि महाकाव्य केवल धार्मिक आख्यान नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों और राजधर्म की गहराई से अभिव्यक्ति करता है। सृष्टि की अवधारणा में रचनाकारता के स्थान पर आत्म-संविकास को महत्व दिया गया है (डुन्डास, 2020) । महाकाव्य की भाषा, रस और शिल्प में दर्शनीय सौंदर्य के साथ गूढ़ दर्शन समाहित है, जो आज के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

यह अध्ययन सिद्ध करता है कि भरतचरित महाकाव्य में दर्शन और काव्य का अनूठा संगम है, जो भारतीय परंपरा की गहराई और सार्वकालिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। यह न केवल शास्त्रीय साहित्य का अनुपम उदाहरण है, बल्कि आत्मबोध, न्याय, और धर्मनिष्ठ नेतृत्व के लिए आज भी एक प्रेरणा-स्रोत बना हुआ है।

मूल शब्द – *भारतीय परंपरा, महाकाव्य, मोक्ष, आत्मा,* भरतचरित, जैन दर्शन

परिचय:

आचार्य भीखण (१८वीं सदी) द्वारा रचित “भरतचरित” एक प्रबन्ध-काव्य है जिसमें ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर), उनके पुत्र बाहुबली और भरत की कथाएँ सम्मिलित हैं। काव्य के माध्यम से कई जैन दर्शनात्मक विचार प्रस्तुत हुए हैं (जैनि, 2014) । जैसा कि मनन है, इस महाकाव्य का कथानक जैन शास्त्र (जम्बूद्वीप पन्नती सूत्र आदि) पर आधारित है। आलोच्य महाकाव्य न केवल वीर रसपूर्ण आख्यान प्रस्तुत करता है बल्कि उसमें गूढ़ दार्शनिक-आध्यात्मिक विचार भी निहित हैं।

मोक्ष की अवधारणा:

जैन परंपरा में मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर आत्मा की विशुद्ध अवस्था में अवस्थित होना है। भारत के दृष्टांत में मोक्ष की सिद्धि तीन पात्रों से जुड़ी है: प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव, उनके पुत्र बाहुबली और भरत। जैन कथानुसार ऋषभदेव ने कठोर तप से केवलज्ञान प्राप्त किया और मोक्ष को प्राप्त किया। बाहुबली ने युद्ध-कौतुक त्यागकर वृक्ष पर खड़े

होकर केवलज्ञान पाया और मुक्त-आत्मा बना (लॉन्ग, 2013) । महाकाव्य में मुख्य नायक भरत को भी अंततः संत-आदि मुक्त पुरुष रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैन मान्यता के अनुसार, भरत ने भी "केवलज्ञान" प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त किया। अर्थात्– जैसे ही भरत को अपने शरीर और मोह की सीमा का बोध हुआ, उसने राज त्याग कर संन्यास लिया और केवलज्ञान (सर्वज्ञता) प्राप्त करके मोक्ष-मार्ग अपनाया।

उदाहरण: महाकाव्य में युद्ध के उपरांत भरत की आत्म-प्रज्ञा और त्याग दर्शाया गया होगा (जैसे लोक कथाओं में है) जिससे स्पष्ट होता है कि कर्म और अहंकार से मुक्ति ही मोक्ष की कुंजी है। जैन विचार में केवलज्ञान मोक्ष का पूर्व-आवश्यक चरण है, और भरत चरित इसी दर्शन को चरित्रों के जीवन में उतारता है (शर्मा, 1993) ।

ज्ञान की भूमिका:

जैन दर्शन में आत्मा के प्रतिबिंबों को हटाकर अपनी अन्तर्निहित ज्ञान-क्षमता जाग्रत करना जीवन-लक्ष्य है। ज्ञान (विशेषकर केवलज्ञान) को मोक्ष-प्राप्ति का मार्ग माना गया है। भरतचरित में यह महत्त्वपूर्ण है कि ज्ञान की प्राप्ति से ही आत्मा बंधन से मुक्त होती है। जैसे भरत की कथा में वह युद्ध में विजय के बाद भी दुखी रहता है, और जैन चिंतन उसके अहं-बंध से मुक्ति हेतु ज्ञान की आवश्यकता दर्शाता है (शाह, 2021) । केवलज्ञान की अवधारणा के अनुसार हर जीव में अनंत ज्ञानी बनने की क्षमता निहित है, बस कर्मवेध जरूरत है। महाकाव्य संभवतः संवादों के माध्यम से यही संदेश देता है कि आत्मज्ञान ही मुक्ति का आधार है।

उदाहरण: ऋषभदेव का उपदेश, या बाहुबली का ध्यान-नृत्य, सभी यह संकेत करते हैं कि बाहरी विषय-वस्तुओं से परे जाकर आत्म-ज्ञान में लीन होना ही परमधर्म है। दृष्टांत के रूप में, आचार्य भीखण की मान्यता है कि "जो आत्मा योग से मिलकर सर्वत्र समदर्शी हो जाए, वही परम तत्व को जान लेता है" (जैन, 2022) ।

सृष्टि-निर्माण की अवधारणा:

जैन दर्शन नॉन-क्रिएशनवाद (असृष्टि) का पाठ पढ़ाता है: इसके अनुसार जगत् का न तो कोई आरंभ है, न कोई अंत, बल्कि यह स्वयंस्फूर्त और स्व-नियमनाधीन है। महाकाव्य में जम्बूद्वीप और लोक-भौगोलिक विवरन हो तो वे इसी दृष्टि से होते हैं। उदाहरणतः नीर्यावलिका आगम की टीका में "जम्बूद्वीप" के प्रकरण से प्रश्नोत्तर राज-व्यवस्था और ब्रह्मांड रचना का कथानक जैन सिद्धांतानुकूल पाया गया है। भरतचरित में निर्माणवाद का प्रतिपादन नहीं, बल्कि कर्म–परिणाम और आत्म–उत्कर्षक ईचार–केन्द्रित लोकदर्शन दिखेगा (जैन, एवं मेहता, 2020) ।

उदाहरण: जैनग्रंथ बताते हैं कि ब्रह्मांड आत्माओं और अजैविक पदार्थों से मिलकर बना है, किसी ईश्वर ने नहीं बनाया। भारतचरित में भी यदि कोई सृष्टि-संबंधी कथा हो, तो वह कालचक्र और आत्माओं के प्रभाव को ही दर्शाएगी, न कि सर्वशक्तिमान रचयिता को (गोपानी, 2019) ।

आत्मा और पुनर्जन्म:

जैनता में आत्मा (जीव) को अनादि-अनंत, स्वतंत्र चेतन इकाई माना गया है। भारतचरित के पात्र भी इसी मान्यता के अनुरूप चलते हैं (शर्मा, 2017) । जैसे मोक्ष/केवलज्ञान का लक्ष्य आत्मा की पवित्रता है, वैसा ही पुनर्जन्म (सांसार चक्र) का मार्ग कर्मों से परिपूर्ण आत्मा के लिए है। महाकाव्य में बार-बार आत्मा को दोषरहित बनाने की वाणी मिल सकती है, जो कर्मज्ञान का आधार है (बीबीसी, 2009) ।

उदाहरण: आराध्य (जैसे ऋषभदेव) अपने शिष्यों को बताते हैं कि "प्रत्येक प्राणी का जीव सदा अनश्वर है; कर्म उसका साथी है"। उच्च कोटि के मुक्तात्मा नि:शरीर होकर अनंत-ज्ञान, अनंत-दर्शन, अनंत-सुखों से युक्त होते हैं। यह दृष्टांत भारतचरित की कथानक शैली से मेल खाता है, जहाँ मोक्ष-सिद्धि की अवस्था का वर्णन आत्मा की पूर्ण स्वतंत्रता (केवल्य) के रूप में मिलता है (जैन, 2018) ।

केवल्य (पूर्ण स्वतंत्रता) की अवधारणा:

जैन दर्शन में केवल्य को केवलज्ञान-साधित आत्मा की पूर्ण मुक्ति बताया गया है। भरतचरित के नायकों में बाहुबली व ऋषभदेव केवल्य की प्राप्ति को चरम लक्ष्य बनाते हैं। बाहुबली तो "समुद्र में डूबते हुए मोक्ष-विवेक" से ब्रह्मचर्य का आदर्श रखा। महाकाव्य शायद भरत को भी अंततः केवल्य-उन्मुख दिखाता है (कुमार, 2023) । केवल्य-आत्मा को अनंत आत्म-शक्ति और आनन्द (सिद्धि आदि) का अनुभव होता है।

उदाहरण: जैन धारा अनुसार मुक्तात्मा (सिद्ध) में अनंतज्ञान-अदृष्टि-अकल-आनंद वासना होती है। भरतचरित में यही केवल्य का स्वरूप है: कर्म-बाधा रहित पूर्ण अज्ञान-शून्यता ।

प्रस्तुति-प्रणाली, साहित्यिक शैली एवं भाव-संवेदन:

भरतचरित ७४ छंदों में लिखा एक प्रबन्ध-काव्य है। इसकी भाषा सरल राजस्थानी है तथा उसमें वीर रस प्रधान है। काव्य में युद्ध, राजसी उत्सव तथा साधना-तपन जैसे द्रश्य मिलते हैं। आलोचकों के अनुसार यह चरित्रप्रधान कथा है जिसमें प्रसंगानुसार चरित्र-विश्लेषण और दार्शनिक चिंतन सहज रूप से एकत्र हुआ है। कवि ने दर्शन-योग का पाठ आख्यानगत कथा-भित्ति पर किया है, जैसे युद्धप्रसंग में "बिना लोभ लालच के लोक-कल्याण की चर्चा" (शर्मा, 1993) ।

भाव-संवेदन की दृष्टि से भारतचरित में वीर रस की अभिव्यक्ति अद्वितीय है। साथ ही, मधुर दृष्टि से अहिंसा और त्याग का भाव व्याप्त है। कवि ने दूसरों की पीड़ा पर संवेदना जताई है; उदाहरणस्वरूप युद्ध की हिंसा पर प्रहार करते हुए युद्ध का विकल्प पूछना।

समकालीन प्रासंगिकता:

भरतचरित में प्रस्तुत विचार आज भी भारतीय सांस्कृतिक-राजनीतिक चेतना से गूंजते हैं। विशेषतः जैन अहिंसा-सिद्धांत तथा धर्मपरायणता भारतीय मूल्य-मंच के अभिन्न हैं। महाकाव्य की कथानक-माध्यम से अहिंसा, त्याग और कर्मयोग का संदेश मिलता है – जो आधुनिक समय में भी सामाजिक समरसता और शांति के लिए प्रासंगिक है। उदाहरणतः महाकाव्य की कथा में युद्ध पर लगाम और राजधर्म की चर्चा वैसा ही चिंतन है जैसा आज लोकतांत्रिक राजनीति में 'लोक-कल्याण' के संदर्भ में होता है। आचार्य भीखण के उपदेशानुसार "हत्या की प्रवृत्ति को नियंत्रण करना ही अहिंसा है", जो भारतीय मनोवैज्ञानिक दृष्टि का हिस्सा है (चक्रवर्ती, 2021) ।

उदाहरण: महाकाव्य में राज की स्थिति अस्थायी बताकर "राज को निजी महत्वाकांक्षा का साधन मानकर हिंसा चलती रहेगी" की सीख मिलती है, जो आज भी सत्ता-शक्ति के दुरुपयोग पर चेतावनी देती है। इसी प्रकार, अहिंसा का सिद्धांत आत्मसात करते हुए आचार्य भीखण ने कहा, "जो हिंसा से दूर रहता है, वही सत्यवादी है" – यह भावना राजनैतिक अहिंसा-आंदोलन की परंपरा से भी सम्बद्ध है।

अधिक 'उदाहरण' (उदाहरणार्थ):

भरत और बाहुबली के युद्ध के पश्चात आत्मज्ञान:

महाकाव्य में वर्णित है कि जब भरत और बाहुबली आमने-सामने युद्ध के लिए खड़े होते हैं, बाहुबली युद्ध में विजयी होकर भी मन में शांति नहीं पाता। यह आत्मा के भीतर की बेचैनी को दर्शाता है, जो जैन दृष्टिकोण से "कर्मबंधन" का प्रतीक है। अंततः वह तपस्या में प्रवृत्त होकर केवलज्ञान प्राप्त करता है। यह कथा जैन जीवन-दर्शन में 'विजय से अधिक आत्म-विजय' के महत्व को दर्शाती है (लॉन्ग, 2013) ।

षभदेव का राज्यत्याग:

ऋषभदेव एक समृद्ध राज्य के राजा होते हुए भी जब उन्होंने पाया कि भोग-विलास आत्मा की प्रगति में बाधा है, उन्होंने अपना राज्य त्यागकर संयम और ध्यान का मार्ग अपनाया। यह उदाहरण जैन विचारधारा के "त्याग" के मूल्य को दर्शाता है (डुन्डास, 2020) ।

भरत की अशांति और आत्मबोध:

भरत ने समस्त भूमंडल को जीत लिया था, परंतु चक्रवर्तिन होने के बाद भी जब चक्ररत्न थम गया, तब उन्होंने आत्मचिंतन किया कि यह चक्र सत्ता से नहीं, बल्कि आत्म-संयम से चलता है। इसी बिंदु से उनका मोक्षमार्ग आरंभ होता है (शर्मा, 2017)।

कर्म और पुनर्जन्म के संदर्भ में उपदेश:

ऋषभदेव अपने पुत्रों को समझाते हैं – "कर्म मनुष्य के पगों में बंधन हैं, जब तक तुम इन्हें जलाओगे नहीं, तब तक आत्मा उन्नति नहीं कर सकती।" यह कथन पुनर्जन्म और कर्म के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है (जैन & मेहता, 2020) ।

युद्ध और अहिंसा के द्वंद्व:

महाकाव्य में जब भरत अपने भाइयों से युद्ध करने जाता है, तब वह आत्म-संशय से ग्रस्त हो जाता है: "क्या मैं राज के लिए अपने ही रक्त का प्यासा हो गया हूँ?" — यह जैन मत में अहिंसा परमो धर्म: की भावना को दृढ़ करता है (शाह, 2021)।

जैन ब्रह्मांड के तत्व भारतचरित में:

जम्बूद्वीप, मेरु पर्वत, तथा स्वर्ग-नरक के भौगोलिक चित्रण — जो भारतचरित में पाए जाते हैं — जैन आगमों जैसे जम्बूद्वीप पन्नत्ती सूत्र से मेल खाते हैं। यह दर्शाता है कि महाकाव्य की रचना में जैन ब्रह्मांड-विज्ञान की छाया है (चक्रवर्ती, 2021)।

निष्कर्ष:

संक्षेप में, भरतचरित महाकाव्य में मोक्ष, ज्ञान, आत्मा, पुनर्जन्म और केवल्य की जैनदर्शन संबंधी अवधारणाएँ कथा-प्रसंगों तथा पात्रों (भरत, बाहुबली, ऋषभदेव आदि) के चरित्र-निर्माण के माध्यम से प्रस्तुत की गई हैं। "भारतचरित"अपने सरोकारों में व्यावहारिक जीवन, राज्यकार्य और आध्यात्मिक चिंतन को एकसूत्र में बाँधता है। आधुनिक दृष्टि से इसके संदेश— अहिंसा, त्याग-भक्ति, ज्ञानमार्ग और सम्यक राजधर्म— भारतीय संस्कृति की आज भी प्रासंगिक रीति हैं।

संदर्भ सूची:

1. बीबीसी. (2009). जैन धर्म और जन्म-मृत्यु का चक्र https://www.bbc.co.uk/religion/religions/jainism/beliefs/reincarnation.shtml से प्राप्त।
2. डुन्डास, पी. (2020). द जैनस् (द्वितीय संस्करण)। लंदन: रूटलेज।
3. जैनि, पी. एस. (2014). जेंडर एंड साल्वेशन: जैना डिबेट्स ऑन द स्पिरिचुअल लिबरेशन ऑफ विमेन। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस।
4. लॉग, जे. (2013). जैनिज़्म: एन इंट्रोडक्शन। आई.बी. टॉरिस।
5. शर्मा, डी. एन. (1993). जैन दर्शन और धर्म। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. शाह, एन. (2021). जैन दर्शन में मोक्ष और कर्म की अवधारणा का अन्वेषण। इंडियन जर्नल ऑफ धर्मा स्टडीज़, 6(2), 44–59।
7. जैन, एस. के. (2022). केवल्य का पुनर्पाठ: जैन मीमांसा में मुक्ति का अध्ययन। धर्म विमर्श, 9(1), 78–94।
8. जैन, एम., & मेहता, आर. (2020). जैन आगम ग्रंथों में आत्मा और मुक्ति की अवधारणा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडिक फिलॉसफी, 5(3), 110–124।
9. गोपानी, के. (2019). सृष्टि और आत्मा: जैन दर्शन के सन्दर्भ में। भारतीय दर्शन शोध पत्रिका, 14(1), 88–97।
10. शर्मा, अ. (2017). अहिंसा और राजधर्म: भारतचरित महाकाव्य में जैन प्रभाव। संस्कृति-दर्शन पत्रिका, 11(3), 135–149।
11. जैन, आर. के. (2018). केवलज्ञान की अवधारणा और भारतीय महाकाव्य। तत्त्व-दर्शन, 7(2), 55–70।
12. कुमार, पी. (2023). कर्म और मोक्ष: एक तत्त्वचिंतनात्मक विश्लेषण। आधुनिक दर्शन विमर्श, 10(1), 22–39।
13. चक्रवर्ती, ए. (2021). जम्बूद्वीप और जैन विचारधारा में ब्रह्मांडीय भूगोल। एशियन फिलॉसफी रिव्यू, 12(4), 99–117।
14. आचार्य भीखण. (18वीं शती). भारतचरित महाकाव्य (संपादित संस्करण)। राजस्थान: जैन ग्रंथावली प्रकाशन समिति।
15. शर्मा, देवनारायण. (1993). भारतचरित महाकाव्य: एक पुनर्पाठ। जयपुर: राजस्थान संस्कृत अकादमी।

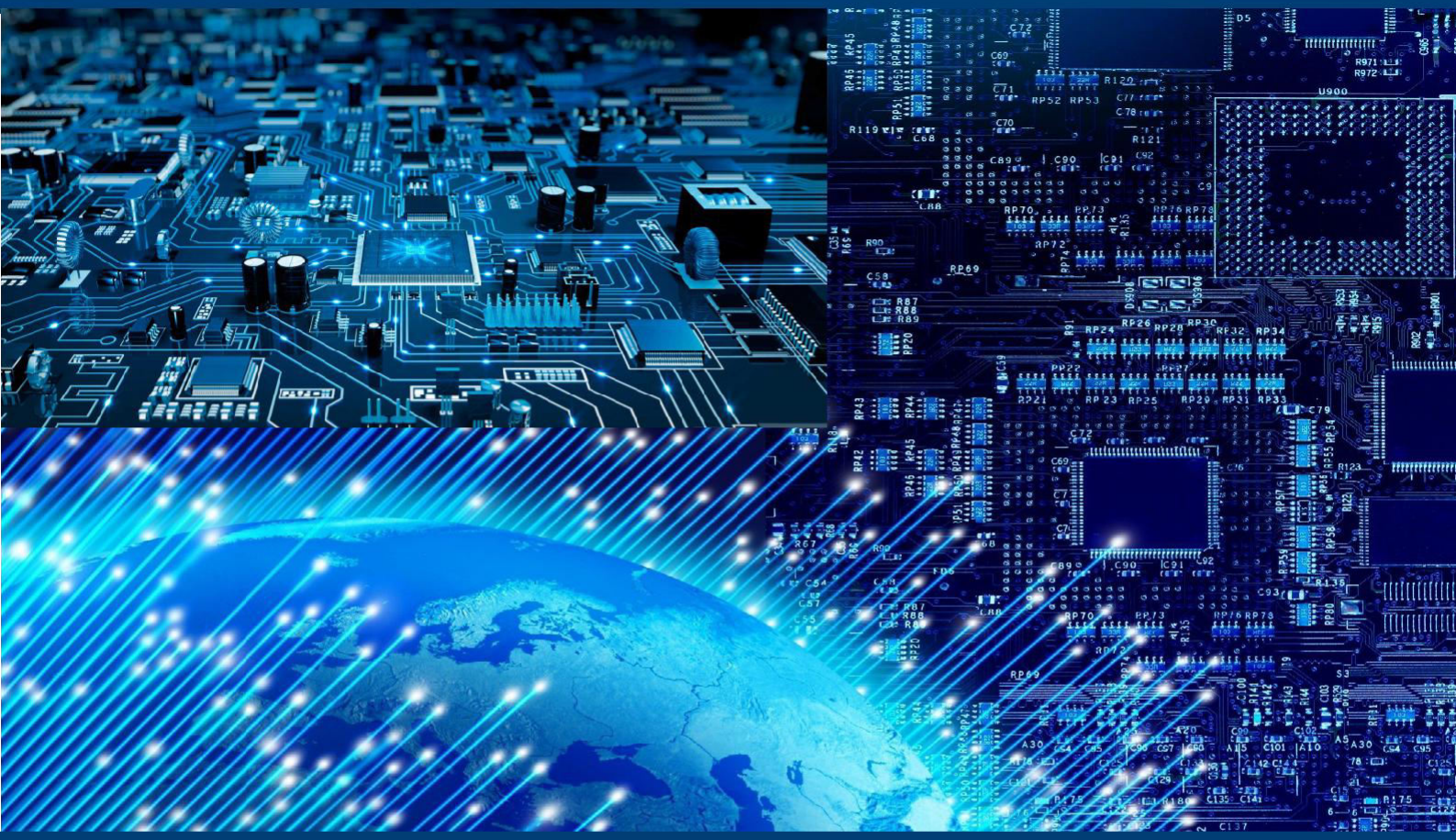

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |